

“
कीड़ी पड़ी हेद मे,
पाकड़िये सोटी गई उड़वा ना फाफअ पड़े,
ने पड़ी पड़ी पशताए
९९

जैविक कीटनाशकों के उपयोग से फसल सुरक्षा प्रबन्धन



प्यारे किसान भाइयों बहनोँ, प्यारे बच्चो जय गुरु !!!
वर्ष 2023 जनवरी माह के पहले अंक में आप तक वातें पत्रिका के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है । मैं इस पुरे वर्ष के लिए आपको और आपके परिवार को शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ साथ ही मकर सक्रांति की अनंत शुभकामनाएँ !

इस माह में विशेष रूप से आपसे यह आग्रह करना चाहता हूँ कि क्या हम वर्ष 2023 को स्वराज वर्ष के रूप में हमारी आदिवासी संस्कृति परम्परा को मजबूत और स्थापित करने के रूप में देख सकते हैं क्या ? अगर हम ऐसा कर पाते है तो ये हमारे लिए बड़ा महत्वपूर्ण होगा जैसा कि हम समय-समय पर देखते आये हैं । हम हमारे परिवारों में बात करके चर्चा में पूछ सकते है कि किस प्रकार से पिछले 4 से 5 दशक में हमारी निर्भरता बाजार पर बढ़ती गई । हमारी आजीविका और हमारी आय का हिस्सा किस प्रकार से दिन प्रतिदिन बाजार जाने के लिए बढ़ता जा रहा है । पहले हमको केवल मात्र नमक के लिए निर्भर होना होता था फिर हम केरोसिन के लिए निर्भर होने लगे, इसके बाद कुछ कपड़ों के लिए होने लग गए । हमारे साथियों से चर्चा में जब बात निकली तो पहले हमको हमारे मवेशियों को बांधने के लिए रस्सी लानी नहीं होती थी अब उसके लिए भी हम बाहरी दुनिया पर निर्भर होने लग गए है और किस प्रकार से हम हमारे पशुओ को पालते है । उस पशु के पालन का लाभ उस नाइलोन बनाने वाली बड़ी से बड़ी कंपनियों को मिलता है और हमारी आजीविका इन सारी विषयों से होती हुई जाने लगी, फिर तकनीकी ने हमारे जीवन में प्रवेश किया मोबाइल का रिचार्ज,मोटरसाइकिल उसका पेट्रोल, ट्रेक्टर हमारी दवाइयाँ इसी तरह आप अगर पुरी सूची बनाएंगे तो हमारी आय का 60-70 प्रतिशत हमारे घर से चला जाता है । हम इस वर्ष लिखे और देखे की किस प्रकार से जाने वाले पैसे को हमारे घर से रोके, हमारे फले से रोके,हमारे गांव से रोके, हमारी पंचायत से रोके, हम आपसी आदान-प्रदान से कैसे हमारी कमियों को दूर कर सकते हैं । हमारी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं उसके लिए हम हमारे ग्राम स्तर के कौनसे ग्राम उद्योग को कर सकते है पहले हम चावल को हमारे घर में तैयार करते थे धान को काट करके परंतु फिर हम धान बेचने लग गये और चावल खरीदने लग गए, मुझे प्रसन्नता हुई हमारे साथी दिनेश भाई ने आनंदपुरी उपखंड की उदयपुरा पंचायत में किस प्रकार से छोटी सी चक्की से अपने चावल को तैयार करना शुरू कर दिया क्या हमारे प्रत्येक साथी हर गांव में, हर पंचायत में इस प्रकार का प्रयास कर सकते हैं । हमारी मिर्ची,हमारी हल्दी, हमारे मसाले, हमारे चावल, हमारा शहद, हमारी दालें,हमारा सूत, हमारे मवेशियों के लिए बनने वाला सण उनकी रस्सियाँ व हमारे विचार स्थानीय रूप से मजबूत कर सकते हैं यही मेरा आग्रह है, पुनःवर्ष 2023 के लिए आपको बहुत सारी शुभकामनाएँ।

आशा करता हूँ कि मेरे इस आग्रह को केवल मात्र एक संदेश न मानते हुए इसे प्रक्रिया में लाएंगे और हम आने वाले अंक में कोई उदाहरण प्रस्तुत कर पाएंगे । हमारा इस पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुंचना सफल होगा ।

जय गुरु, जय स्वराज !

आपका अपना
जयेश जोशी

खेती-किसानी के काम को मौसम के अनुरूप करने से अच्छा उत्पादन मिलता है। यदि मौसम के अनुसार सही समय पर फसल की बुवाई का काम किया जाए तो अच्छी पैदावार मिलती है, साथ ही बेहतर मुनाफा भी होता है। इसलिए किस महीने किस फसल की बुवाई करनी चाहिए ये हमें पता होना चाहिए, तभी हम उस फसल का अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। चाहे वो अनाज हो या दलहनी फसल हो या फिर सब्जियों की फसल ही क्यों न हो। इस समय गेहूं की फसल बढ़िया चल रही है । गेहूं लंबी अवधि कि फसल है। इस बीच किसान सब्जी की खेती करके इससे अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। ऐसी कई सब्जियाँ हैं, जो कम लागत में अच्छी कमाई देती हैं। आप इनकी खेती जनवरी माह में करके अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

कीट प्रबंधन

फसलों का रस चूसने वाले कीड़े का प्रकोप होने पर निम्बोली अर्क या दसपर्णी काढ़े के घोल का उपयोग करें। फसलों में छोटी से मध्यम आकार की इल्लियाँ, थिप्स, लाल मकड़ी दिखाई देने पर प्याज, लहसुन अदरक और मिर्च का घोल या पुरानी छांछ का छिड़काव करें। चने में एक एकड़ में 5 से 6 फेरोमोन ट्रेप लगायें एवं ट्रेप का कैप्सूल समय पर बदलते रहें । इस माह फफूंद रोग से बचाव हेतु ताम्बायुक्त छांछ / गाय का दूध / मिर्च, प्याज, लहसुन, अदरक के घोल का छिड़काव आवश्यकतानुसार करें ।

जैविक चटनी

सामग्री :-

500 ग्राम लहसुन

500 ग्राम अदरक

500 ग्राम प्याज

250 ग्राम तीखी लाल या हरी मिर्च

बनाने कि विधि :-

मिक्सर या पत्थर की सहायता से इसका पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को 4-5 लीटर गुनगुने पानी में मिलाकर इस घोल को एक दिन के लिए रख दें। इसे सूती कपड़े की सहायता से छान लें और छने हुए घोल को एक साफ बर्तन में रख दें।

उपयोग:-

फसल की छोटी अवस्था में (बुवाई के 30 दिन बाद तक) 250 मि.ली. जैविक चटनी का अर्क 15 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें। फसल की उम्र के 40 दिन बाद 500 मि.ली. जैविक चटनी को 15 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।

लाभ :-

फसलों पर जैविक चटनी का छिड़काव रस चूसने वाले कीट सफेद मक्खी, घुन को नियंत्रित करने और कैटरपिलर को नियंत्रित करने में भी मदद करता है। बेहतर परिणामों के लिए 1 महीने के भीतर जैविक चटनी घोल का उपयोग करें।

कंडा पानी

सामग्री:-

10 से 12 कंडे / उपले

40 से 50 लीटर पानी

बनाने कि विधि :-

प्लास्टिक के ड्रम में कंडो को 50 लीटर पानी में 4 से 5 दिन के लिए डुबा कर रखें,इसके बाद ड्रम में से कंडो को बाहर निकालकर बचे हुए पानी को छान ले ।

उपयोग :-

1 से 2 लीटर प्रति कंडा पानी 15 लीटर पानी में मिलकर फसल पर छिड़काव करना है ।

लाभ :-

इसमे जिवरेलीक और हुमिक अम्ल होता है इससे पौधों में वृद्धि एवं विकास बहुत अच्छा होता है

उन्नत जैविक खाद निर्माण



प्रथम पद : वनस्पति, काड़ी कचरा एवं गोबर मिश्रित सामग्री को मिलाकर 5 फीट ऊंचाई 10 फीट लम्बाई एवं 4 फीट चौड़ाई का बिस्तर तैयार करें, बिस्तर तैयार करते समय प्रत्येक एक फीट ऊंचाई पर 5 किलो किसी भी दाल या मक्के की चुरी, 3 किलो स्वयं के बोरेल की चुरी डाल देवे अब इस पर मेड़ की मिट्टी की आधा इंच की परत डालें, बिस्तर तैयार करते समय मिश्रण में 10 प्रतिशत गोमूत्र युक्त पानी आवश्यकतानुसार छिड़के अब बिस्तर को काली पॉलिथीन शीट से ढांक कर या गोबर मिट्टी से लीपकर 30 दिनों के लिए रख देवे ।

द्वितीय पद :- 30 से 40 दिनों के बाद बिस्तर की पलटीकर 10 प्रतिशत गोमूत्र वाला पानी आवश्यकतानुसार छिड़के मिश्रण को पॉलीथीन शीट से ढांक कर या गोबर मिट्टी से लीपकर पुनः 30 दिनों के लिए रख देवे ।

तृतीय पद :- 60-70 दिनों के बाद पुनः बिस्तर की पलटी कर बिस्तर में एक मटका खाद (जीवामृत) को 200 लीटर पानी में घोलकर अच्छे से मिला देवें। मिश्रण को पुनः पॉलीथीन शीट से ढांककर या गोबर मिट्टी से लीपकर 30 दिनों के लिए रख देवें। इस प्रकार 90 से 100 दिन में उन्नत जैविक खाद तैयार हो जाएगी. यह खाद समस्त पोषक तत्वों तथा लाभकारी सूक्ष्म जीवों से युक्त है। बोनी के पूर्व 2 टन पकी हुई उन्नत जैविक खाद लाइन या कतार में देवे, बोनी के 30 दिन एवं 60 दिन के बाद आवश्यकतानुसार 5 क्विंटल उन्नत जैविक खाद पौधे के पास रिंग बनाकर भूमि में देवे ।

खेत में नमी बनायें रखें, सल्फर युक्त लहसुन और प्याज के घोल का छिड़काव करें। गोमूत्र मटके या प्लास्टिक पात्र में इकट्ठा करते रहे।

फसलों को कीटों, रोगों एवं खरपतवारों आदि से प्रतिवर्ष 7 से 25 प्रतिशत तक क्षति होती है, जिसमें 33 प्रतिशत खरपतवारों द्वारा, 26 प्रतिशत रोगों द्वारा, 20 प्रतिशत कीटों द्वारा, 7 प्रतिशत भण्डारण, 6 प्रतिशत चूहों द्वारा तथा 8 प्रतिशत अन्य कारण सम्मिलित है। यह क्षति दलहन में 7 प्रतिशत, ज्वार में 10 प्रतिशत गेहूं में 11.4 प्रतिशत, गन्ना में 15 प्रतिशत, धान में 18.6 प्रतिशत, कपास में 22 प्रतिशत तथा तिलहन में 25 प्रतिशत तक होती है। फसलों, फलों एवं सब्जियों पर इनके प्रकोप को कम करने के उद्देश्य से कृषकों द्वारा जैविक कीटनाशकों को उपयोग में लिया

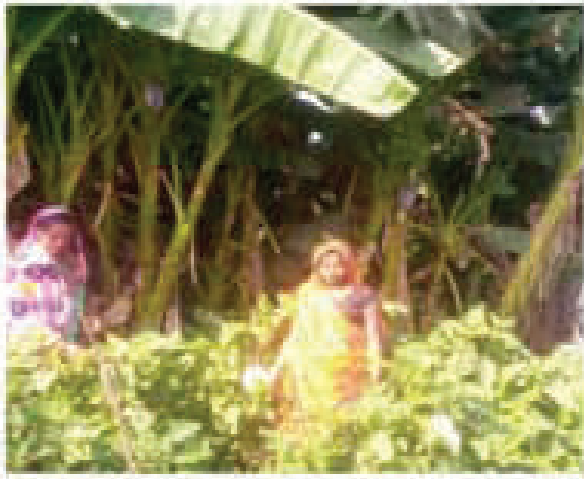
जा रहा है।

कीटनाशकों की औसत खपत 279.60 ग्राम प्रति हेक्टर हैं, जो देश के औसत खपत 288 ग्राम प्रति हेक्टर से कम है। इस औसत खपत में 58.7 प्रतिशत कीटनाशक, 22.0 प्रति तुणनाशक, 16.0 प्रतिशत रोगनाशक तथा 3.3 प्रतिशत चूहा विनाशक/धूम्रक सम्मिलित है। इन रसायनों का प्रयोग करने से जहाँ कीटों, रोगों एवं खरपतवारों में सहनशक्ति पैदा होती है और कीटों के प्राकृतिक शत्रु (मित्र कीट) प्रभावित होते हैं, वहीं कीटनाशकों का अवशेष खाद्य पदार्थों, मिट्टी, पानी, एवं वायु को प्रदूषित करने लगते हैं। कीटनाशक रसायनों के हानिकारक प्रभावों से बचने के लिए जैविक कीटनाशकों का प्रयोग करना आवश्यक है।

जैविक कीटनाशकों से लाभ: जीवों एवं वनस्पतियों पर आधारित उत्पाद होने के कारण, जैविक कीटनाशक लगभग एक माह में भूमि में मिलकर अपघटित हो जाते हैं तथा इनका कोई अंश अवशेष नहीं रहता। यही कारण है कि इन्हें पारिस्थितिकीय मित्र के रूप में जाना जाता है।

1. जैविक कीटनाशक केवल लक्षित कीटों एवं बीमारियों को मारते हैं, जब कि रासायनिक कीटनाशकों से मित्र कीट भी नष्ट हो जाते हैं।

2. जैविक कीटनाशकों के प्रयोग से कीटों/व्याधियों में सहनशीलता एवं प्रतिरोध उत्पन्न नहीं होता जबकि अनेक रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से कीटों में प्रतिरोध क्षमता उत्पन्न होती जा रही है, जिनके कारण उनका प्रयोग अनुपयोगी होता जा रहा है।



सहभागिता का अधिकार

बच्चा जब युवावस्था और इससे आगे बड़े तो स्वयं और देश के निर्माण में आत्मनिर्भरता के साथ सोच समझकर फैसले ले सके

बच्चों के विकास के लिए बेहतर माहौल

बच्चों को बिना किसी भय के अपनी बात कहने यानि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मिले ।

रचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाते हुए तथा समस्याओं को सुलझाना ।

बच्चों द्वारा कही गयी बात को धैर्य के साथ सुनना ।

बच्चों के साथ मिलकर समाधान निकालने वाली सोच के साथ काम किये जाए ।

सहभागिता के अधिकार का पोषण

नियमित रूप से बाल सभाओं का आयोजन किया जाए ।

विद्यालय स्तर पर किये जाने वाले कार्य

शिक्षक और बच्चों के बीच प्रगाढ़ सम्बन्ध

गतिविधि आधारित शैक्षणिक कार्य को बढ़ावा दिया जाए ।

रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों का आयोजन

बालश्रम एवं भिक्षावृत्ति पर सतत निगरानी

3. टीम के जिला समन्वयक के द्वारा नगर परिषद आयुक्त को पत्र के माध्यम से बालश्रम की रोकथाम के लिए निवेदन किया आयुक्त महोदय के द्वारा सभी ठेकेदारों को आदेशित किया गया की किसी भी ठेकेदार के द्वारा बालश्रमिकों को काम पर ना रखे जाने के लिए निर्देशित किया ।

2. टीम ने कार्यवाही करते हुए 3 से 4 दिनों तक बालश्रम की सतत निगरानी की एवं भिक्षावृत्ति की रोकथाम करते हुए शनिवार तक शनि मंदिर के बाहर समस्त बालक बालिकाओं की जानकारी एकत्र की ।



4. टीम के द्वारा मोहन कॉलोनी चौराहा, हाऊसिंग बोर्ड, कुशलबाग मैदान, कॉलेज मैदान इत्यादि स्थानों पर चल रहे कार्यों पर जाकर जानकारी ली जिसमे 5 नाबालिग बालक-बालिकाओं को काम करते देखा तो टीम ने कार्यवाही करते हुए मौके पर ही ठेकेदार को पाबंद करते हुए शपथ पत्र भरवाए गए ।

1. हैलो ! चाइल्ड लाइन 1098 कॉलेज रोड अन्य स्थानों पर नाबालिग बालक बालिकाओं से बालश्रम करवाया जा रहा है एवं शनिवार को हाथों में कर्मंडल लेकर भिक्षावृत्ति करते है आप इस पर कार्यवाही करावे ।

5. शोभा सोनी, निशा चौहान, कमलेश बुनकर, कान्तिलाल यादव, बामुडा कटारा की टीम द्वारा जिले के शनि देव के सभी मंदिरों में जाकर नाबालिग बालक-बालिकाओं के भिक्षावृत्ति करते पाए जाने पर तेरह कर्मंडल जम किये साथ में बालक-बालिकाओं की जानकारी लेकर 6 को शिक्षा से जोड़ने की पहल शुरू कर पुनः शिक्षा से जोड़ा एवं माता पिता को पाबंद किया

नोट :- जरूरत मंद बालको का एक ही सहारा चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा

बच्चों की स्वतंत्र और सक्रिय भूमिका के चलते समुदाय और समाज में भावी पीढ़ियों का राष्ट्रीय स्तर पर दखल और संगठनों में उनकी शांतिपूर्ण सहभागिता को मजबूती मिल सके।



जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

माही

राम – राम

प्रिय साथियो मैने समुदाय के साथ संवाद किया इस दौरान ज्ञात हुआ की दिसम्बर माह में बहुत से गाँवों में यूरिया खाद के लिए किसानों को काफी सारी मशक्कत करनी पड़ी और कही कही ग्राम पंचायतो में तो पुलिस प्रशासन के निगरानी में खाद का वितरण किया गया। साथियो पर मुझे खुशी हुई जब हमारी सक्षम समूह से जुड़ी बहनों ने बताया कि विगत दो वर्षों से हमको ऐसी कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि हमने स्थानीय स्तर पर हमारी परम्पराओं को पुनः जीवित किया जिसमे देशी खाद का सही उपयोग और वनस्पति का भी कम्पोस्ट के रूप में उपयोग लेना सिखा है खास कर जब मैने भुंगडा, पीपलखूट,घाटोल और साबला के आस- पास क्षेत्र में किसान अपने खेतो में देशी खाद का उपयोग कर रहे है।

इस दौरान मेरा संवाद आसपुर विधायक महोदय गोपीचंद जी से होता है तो हर बार नये- नये विचारों में वो बताते है की वाकई इस सदी में इस प्रकार का कार्य सराहनीय है एक दिन हमारा आदिवासी अंचल जो कि बीज,खाद, आधुनिक उपकरणों के लिए बाजार की तरफ गया है वह निश्चित ही नुकसानदायक गतिविधियों को समझेगा और पुनः परम्परागत खेती को स्थापित करेगा।

साथियो मुझे दिसम्बर माह में काफी दुःख हुआ जब घाटोल के



हिरन

सभी वागड़ वासियों, वाते वाग्धारा नी पत्रिका के पाठकों को प्यार भरा राम – राम , जय गुरु साथ ही नवनि वर्ष कि हार्दिक शुभकामनाएं ।

दोस्तों हमने बीते साल के अच्छे पलों को याद कर खुशियाँ मनाई नए साल के दिन देवी -देवताओं के दर्शन कर नए वर्ष की आगवानी की। सर्दी अपने जोर पर है , सर्द हवाएं हमको ठीठुराने पर मजबूर कर रही है। माही माता के मर्फ़त नहरे चल रही है साथ ही फसल खेतों में लहला रही है। पेड़ो पर निम्बू , अमरुद, एवं बेर के फल आ रहे। चना, गेहूँ, मसूर , सरसों , मक्का अपने बढ़वार के चर्च पर है। शकरकंद , गाजर , मटर , टमाटर, बैंगन, वालार, मिर्ची आदि खेत से उपज कर बाजार में धूम मचा रही है। साथ ही अपना सभी का कुछ सालों का साथी कोरोना नए रूप में आने के समावार दे रहा है अतः सावधान रहे। वागड़ की धरा ने हरियाली की ओढनी ओढ रखी है और बड़ी सुन्दर लग रही है।

सच्ची खेती :- माह दिसम्बर में 323 सक्षम समूह में सहभागी सिख अभ्यास के माध्यम से महिला सदस्यों ने सुखमणी, जैविक किट प्रबंधन , जैविक खाद प्रबंधन एवं उपयोग में लेने के तरीके अभ्यास के माध्यम से किये साथ ही 55 गाँवों में किसान खेत पाठशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान किसानो ने स्वयं भी सिखा , उपयोग किया और दूसरो को भी उपयोग करने हेतु प्रेरित किया , 5 दिसम्बर 2022 को 311 गाँवों में विश्व मृदा दिवस का आयोजन किया गया जिसमें 12000 से भी ज्यादा कृषक गवाह रहे , प्रतिज्ञा कर मिट्टी का कटाव रोकेंगे, जल व मृदा संरक्षण को बढ़ावा देंगे, साथ ही पेड पौधे लगाकर धरती का श्रंगार करेंगे। जल, जंगल, जमीन, जानवर व बीज पर स्वराज कायम कर आने वाली पीढ़ी के लिए प्राकृतिक संसाधन सहेजेंगे।



आस -पास के क्षेत्रो में खाद वितरण के लिए पुलिस प्रशासन का सहयोग लिया गया ऐसा क्यों, क्या हमारा क्षेत्र आज हमारे पूर्वजो कि खेती की तकनिको से दूर हो चुका है,देसी खाद को संजोना भूल गया, पशुधन से दूर हो गया,आजीविका के लिए पलायन पर निर्भर आखिर ऐसा क्या हुआ जो यह दिन आज हमें देखने को मिल रहे है , साथियो वाकई सोचना पड़ेगा की किस प्रकार से हम मिलकर हमारा जल,जंगल,जमीन,जानवर और बीज को पुनः पारंपरिक रूप से स्थापित करे और बाकी के राज्य को यह सन्देश भेजे की आज भी आदिवासी किसान बाजार के सहारे नहीं है।

सच्ची खेती - संस्था के प्रयासों से वर्तमान समय में 114 गाँवों में 642 किसानो ने हल्दी की खेती की ओर रुझान किया है अभी के लिए एक सुखद आकड़ा है क्योंकि हल्दी की खेती हमारे अंचल में लगभग ख़त्म होने आई थी शायद ही किसी गाँव में हमें हल्दी देखने को मिले पर मुझे विश्वास है कि यह आकड़ा एक दिन 6000 किसानो तक भी जाएगा और हल्दी के लिए जल्द ही हमारे क्षेत्र की पहचान बनेगी। हमारे टीम साथियो ने विभिन्न देशी बीजो की पहचान कर अभी तक 41 प्रकार के बीज एकत्रित कर लिए है जिससे यह देखा जा सकता है कि अभी भी हमारे आदिवासी क्षेत्र में बीज के लिए बाजार पर निर्भरता इतनी ज्यादा नहीं बढी है साथियो इसको हमे कायम रखना होगा



मानगढ़

नए वर्ष की आप सभी को बहुत – बहुत शुभकामनाये...

ईश्वर से प्रार्थना है कि वर्ष 2023 हम सभी के जीवन में खुशियाँ लेकर आए

सच्चा बचपन: माह दिसंबर में 252 गाँवों में ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों की मासिक बैठक आयोजित की गई। पंचायत स्तर पर 89 बाल पंचायतों की बैठक की गई, बैठक में बाल मित्र गाँव बनाने के लिए काम किया गया, उपस्थित सदस्यों द्वारा विद्यालयों, ग्राम चौपालों और ग्राम पंचायतों में विशेष बैठकों का आयोजन करके बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं सभी बच्चों की पहुँच सुनिश्चित करने का कार्य किया गया। विद्यालयों में विविध खेल एवं रचनात्मक गतिविधियों के साथ ही बच्चों की दुष्टि में बाल सुलभ पंचायत बनाने के लिए प्रयास किये. साथ ही ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों की बैठकों में बाल मित्र गाँव बनाने की कार्ययोजना का पुनर्मूल्यांकन कर रणनीति तैयार की गई।

सच्ची खेती: मानगढ़ इकाई के 267 गाँवों में सक्षम समूह तथा 70 पीजीएस समूहों की बैठक की गई इन बैठकों के माध्यम से जैविक पद्धति से किट प्रबंधन के लिए निमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, जीवामृत तथा गोबर के उपले (साण) का उपयोग करके पौधो के लिए टॉनिक बनाने की विधि प्रयोग करके बताई गई. वाग्धारा के साथी कार्यकर्ताओं ने ग्रामीणों को अधिक मात्रा



क्योंकि हम देखे तो हमारे पूर्वजो के द्वारा बचाया गया बीज आज भी हम उपयोग में ले रहे है और भविष्य में भी लेते रहेंगे ऐसी कामना करता हूँ।

सच्चा बचपन- इस माह विशेष कर युवा साथियों से निवेदन करूंगा कि आपके प्रयास आप नियमित रखे ना की हार मान ले क्योंकि साथियो रास्ते की खोज हमें स्वयं ही करनी पड़ती है न की किसी के सहारे, आप यकीन मानिये जब आप अपनी उस मंजिल तक पहुँचेंगे तो आपको अलग ही आनंद की अनुभुती होगी।

कई बार देखा गया है कि आज समाज में हर व्यक्ति अपने बच्चो को श्रेष्ठ शिक्षा दिलवाना चाहता है और इसके साथ ही यह भी अपेक्षा रखता है कि मेरा बच्चा सब बच्चो से श्रेष्ठ हो, परन्तु वह स्वयं यह भूल जाता है कि जब उसने यही शिक्षा ग्रहण की थी तब वह स्वयं कहा था शायद उस चीज का एहसास आज अभिभावक भूल गये है एक बार पुनः में यह नहीं कहना चाहता हूँ कि आप अपने बच्चो से उम्मीद ना रखे पर ऐसी उम्मीद भी ना रखे की बच्चा आपको भविष्य में कोसे, बच्चो से कितनी अपेक्षा रखनी है और हाँ बच्चो को भविष्य का रोबोट बनाना है या इंसान, इन सब प्रश्नों के साथ हमे विचार करना होगा।

सच्चा स्वराज-ख़ुशी है इस बार संगठनो ने अपने क्षेत्र में स्थानीय



मानगढ़

में तैयार सब्जियों की सुखमणी कर सुरक्षित रखने के लिए भण्डारण की विधियाँ बताई. आनंदपुरी और गांगडतलाई में रबी और जायद के सीजन में अतिगरीब परिवारों को पोषण के लिए सब्जियाँ प्राप्त हो इस हेतु उद्यानिकी विभाग के माध्यम से 804 अतिगरीब श्रेणी के परिवारों को सब्जियों के बीज कीट उपलब्ध कराये गए. सक्षम समूह से जुड़ी महिलाओं ने उक्त बीजो को जो अधिक मात्रा में थे उन्हें समूह की अन्य महिलाओं के साथ भी साझा किया गया। परंपरागत बीजो के संरक्षण के लिए चलाया अभियान...

मानगढ़ इकाई के आनंदपुरी, गांगडतलाई, झालोद और फतेहपुरा के 295 गाँवों में परंपरागत और लुप्त होते जा रहे बीजो का अध्ययन किया जा रहा है. जिसमे दुधी मक्का, पोटलिया मक्का, गुजरी धान, काली क्मोद जैसे 28 प्रकार के लुप्त होते जा रहे बीजो का अध्ययन कर बीज संरक्षण के लिए सेम्पल संगृहीत किये जा रहे है।

सच्चा स्वराज: ग्राम स्तर पर स्वराज के कार्यों को गति देने के लिए तथा स्वयंसेवकों के क्षमतावर्धन के लिए एक दिवसीय स्वराज स्वयं सेवक सम्मलेन का आयोजन झालोद स्थित जलईमाता मंदिर पर किया गया. जिसमे झालोद विकासखंड के 30 गाँवो के 127 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। कृषि विषय विशेषज्ञ श्री पी. एल. पटेल, इकाई लीडर प्रशांत शोरात, बाबुलाल चौधरी ने विभिन्न सत्रों का संचालन करते हुए स्वयंसेवकों को समाज के वंचित वर्ग को ग्राम विकास



